RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 39 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 6 मार्च 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

होली अंक 2023

दाज्यू, कुड़बुद्धियों को ढूंढो

दाज्यू, पंचायत, निकाय और लोकसभा चुनाव के लिये यह होली तरावट देने वाली है। हमारी मानो, कुड़बुद्धियों को ढूंढो। जमन दा बता रहे हैं- 'सारा शहर अमृत वर्ष में तैर रहा है। शहर की उधेड़बुन में सीवर से लेकर गैस पाइप लाइन के गड्ढे खुद चुके हैं। करोड़ों रुपयों की लिपाई-घिसाई होने वाली है।' दाज्यू, हमें तो अंदाज ही नहीं आ रहा है कि भक्ति रस में रमें या शक्ति रस में।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

यह अमृत काल है

इस बार का होली उत्सव 'अमृत काल' में चल रह है। दरअसल हमारी सरकार कह चुकी है कि अमृत काल है तो मान भी लो.....। राज्य में पटवारी-लेखपाल भर्ती परीक्षा में मार घपलचू के बाद से नया-नया सूझ रहा है। होली से पहले अपने भगत दा को महाराष्ट्र के राज्यपाल पद से इस्तीफा देना पड़ा। तभी तो होली में खूब गा रहे हैं- 'टपकन लागे मव्वा, झपकन लागे मोर'। भगतदा उत्तराखण्ड की सेवा करने को आतुर हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत 'हरदा' भी हरदम प्रदेश के लिये समर्पित हैं। इन दोनों बुजुर्गवार नेताओं ने जब प्रदेश के उद्धार की ठान रखी है तो कोई चिन्ता की बात नहीं। यूकेडी के काशीसिंह ऐरी 'काशी दा' भी पहाड़ की पैरवी में लट्ठ लिये खड़े दिखाई दे रहे हैं। कद्दावर नेता अजय भट्ट, तीरथ सिंह रावत के अलावा प्रदीप टम्टा, अयज टम्टा, मयूख महर, करन माहरा, होमेश खर्कवाल, तिलकराज, केसी बाबा, महेन्द्र सिंह पाल प्रदेश के हालातों पर अपने अपने गीत गा चुके हैं। पूर्व मुख्य मंत्री डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक', त्रिवेन्द्रसिंह रावत भी लगातार इस प्रदेश (शेष अन्तिम पृष्ठ पर)

मेरा दरद ना जाने कोय

बुरा न मानो होली है

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

गन्दली होती राजनीति के तराजू में त्यौहारों को मत तोलो

त्यौहार खुशियाँ लेकर आते हैं। ऐसा ही होली का त्यौहार। नृत्य और रंग में सनते लोग चाहेंगे कि उनकी यह उमंग हमेशा बनी रहे। त्यौहारों का सन्देश भी यही है कि हम अपने मन-मुटाव भुलाकर पवित्र मन से आगे बढ़ें। फिर होली जैसे त्यौहार में तो यह उल्लास और भी ज्यादा है।

बात मौसम की करें तो यह भी वैज्ञानिक है कि हमारे पुरखों ने मौसम को दृष्टि में रखते हुए त्यौहारों का उल्लास तय कर दिया था। बदलते मौसम के साथ हमारे त्यौहार, मेले, उत्सव बदलते रहते हैं। होली फाल्गुन मास के मस्त महीने का नाम भर नहीं है, यह एक-दूसरे को खुशियों में बोर देने का उत्सव है। मन की उमंग को फागुनी बहार में गाने और चरम अवस्था में नाचने और सामूहिकता का परिचायक भी है।

इतने पवित्र भाव से भरे त्यौहार को भी वर्तमान में गन्दली होती राजनीति में रंगने का काम हो रहा है। खबरदार! अपने त्यौहार में किसी भी तरह से बैर भाव न आने दें। यह हमारी मान-मर्यादा का हैं, यह किसी पार्टी के त्यौहार नहीं हैं, यह किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है, यह उल्लास का अवसर है, एक-दूसरे को मदद करने का भी अवसर है, यह बेसहारा लोगों को भी खुशियां देने का अवसर है। दरअसल होने यह लगा है कि गन्दली होती राजनीति के तराजू में त्यौहारों को तोलने वाले सक्रिय हैं। यह समाज के लिये घातक है। हो सकता है एक ही घर में अलग-अलग राजनैतिक विचारधारा के लोग हों लेकिन त्यौहारों में उसे मनमुटाव बनाकर हाबी न होने दें। न किसी राजनीति भड़ास को त्यौहार में उतारा जाए। हो सके तो इस पर्व पर हम कोई संकल्प लें कि समाज में अपनी ओर से क्या नेक कार्य कर सकते हैं। इसकी शुरुआत अपने और अपने परिवार से हो।

ऐसी छूट अच्छी नहीं है

नई शिक्षा नीति को लेकर बहुत सी बातें सरकार कर रही है और इसके मंत्री भी इसे अपनी ओर से समझा रहे हैं लेकिन इसके लिये तैयारी नहीं है। मात्र कह देने से शिक्षा व्यवस्था का ढांचा नहीं सुधर सकता है। साफ दिखाई दे रहा है कि साधन हीन महाविद्यालयों, लचर विश्वविद्यालयों के साथ हाबी होते छात्र नेताओं का त्रिकोण भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाला है। सरकार कई कालेज खोलने की घोषणा कर चुकी है लेकिन जो कालेज पहले से खुले हैं उनमें ही पूरा स्टाफ, साधन-संसाधन नहीं हैं। शिक्षक शासन के पत्रों व नई नई योजनाओं के पन्ने पलटने और उनके उत्तर देने में ही व्यस्त रहते हैं। ऊपर से नई पीढ़ी के नासमझ छात्र नेताओं की जिद कालेज प्रशासन के लिये सरदर्द होती जा रही है। यह अराजकता और छूट अच्छी नहीं है।

यदि नई शिक्षा नीति को लेकर ईमानदार कार्य होना है तो विषय से सम्बन्धित शिक्षक को केवल उसके विषय का कार्य दिया जाए और जो नियम छात्र-छात्राओं के लिये बनाये गये हैं, उनका पालन सख्ती से हो। विश्वविद्यालय का परीक्षा कार्यक्रम व प्रवेश प्रक्रिया तय समय पर बिना गलती के हो।

होली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

हैप्पी ट्रीट फास्ट फूड कॉर्नर

गैस गोदाम रोड, हल्द्वानी

रंगों और खुशियों का यह त्यौहार आप सभी के जीवन को
तरंगित करे।
मैं अपने ग्राम, शहर, जिला, प्रदेश व देश की समस्त जनता को होली की बधाई प्रेषित करता हूँ-

भोला भट्ट

पूर्व ब्लाक प्रमुख हल्द्वानी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नवीन जोशी के उपन्यास पर चर्चा- ४

देवभूमि डिवेलपर्ड : विकास की गति धीमी करने की अनुसंसा करता है

डॉ.प्रयाग जोशी

कुछ इसी ढब में उपन्यास में 'देवभूमि विल्डर्स' पढ़ लेने के बाद आते हैं। उपन्यास के साधिकारिक कथा के प्रमुख चरित्र पुष्कर और कविता दम्पत्ति के शादी के रिश्तों में बांधने की अत्सुकता बढ़ाने वाली व उभयनिष्ठ लक्ष्य से जीवन की यात्रा में चल पड़ने का खुलासा भी कहानी में बड़ी देर में होता है। इसलिए वरीयता मिल जाती है उन घटनाओं को जो एक अलग राज्य की मांग की पहाड़ी मानसिकता, उसके सामाजिक मनोविज्ञान, उसके भू-भौतिक कारक और समस्त पहलुओं के मुद्दों को पुलिन्दा बनाकर सिर पर उठाने वाले संघर्षशील धड़ों को एकजुटता के अभाव और किसी भी एक या (दो सर्वमान्य अथा बहुमान्य ही सही) नेता के अभाव में, बलवाई जैसे लगने वालों की 'माइक झपट' जैसी 'तू नहीं मैं' को भीड़ में उठने वाले किसम किसम के ऐसे विवरण भी 'कथानक' ही हैं। कहा जा सकता है कि ये कथियायी हुई उत्तराखण्ड निर्माण की गाथा-कथाएं हैं। अनेक तरह की विधाओं में तेज भागती कहानी को अगली क्लू के साथ जोड़ने की आतुरता एक तरफ है, दूसरी राज्य है कि अपने ही अन्तर्विरोधी राजनीति में उससे भी तेज रफ्तार में दौड़ रहा हे। उसके भीतरी और बाहरी हलचलों की उखेल के लिए कथाकार को उन्नीस सौ छियासी के जनान्दोलनों से शुरुआत करनी पड़ी है जिसकी ऐतिहासिक तारीख 26 मार्च उतनी ही अमिट है जितनी आठ नवम्बर दो हजार की।

अगले ही दिन अल्मोड़ा में शराब की नीलामी के टेण्डर खुलने वाले हैं। शराब माफिया बलवन्त की कार को, उसके बर्खुरदारों की टोलियों से बेखौफ आन्दोलनकारी गरमपानपी की बाजार में रोकते हैं। माफिया बलवन्त की कार को, उसके बर्खुरदारों की टोलियों से बेखौफ आन्दोलनकारी गरमपानपी की बाजार में रोकते हैं। उसे खींचकर सड़क में डालते हैं। उसके कपड़े फाड़ते हैं। 'नदी किनारे के अपने खेत से चढ़ाई चढ़कर आई बूढ़ी सावित्री देवी थकान मिटाने के लिए सड़क की मुंडेर पर बैठी थी।

तीन बच्चों का बाप, उसका जवान बेटा तारा शराब की अति से कुछ ही दिन पहले मरा था' अपनी कमर में खुंसा दातुला दाहिने हाथ में लेती है और बलवन्त के कच्छे का नाड़ा काट देती है। डिवेलपमेण्ट के दौड़े आ रहे निवेशों के दसक में बत्तीस वर्ष पूर्व के पहले की घटना पर आधारित रिपोर्ताज से उपन्यास शुरु करने की वजह यह रही कि तब के उत्तराखण्ड की माँ के गर्भ में 'राज्य' नाम का बच्चा आया था।

कहानी में आगे के प्रसंग के बीच ही लेखक भविष्य में होने वाली जीवन संगी की माता की आसन्न मुख-जातरा में शामिल होने बिल्कुल वैसे ही दौड़ पड़ता है जैसे मलामियों की एक धाद पर, बोने के लिए छिड़के हुए बीजों और जुते हुए बैलों को छोड़ कर जनाजे में शरीक होने की कुमाऊँ की परिपाटी रही है। इसी रफ्तार में उत्तराखण्ड में उत्तराखण्ड की समानान्तर कहानियाँ जुड़ती-अँटती ओर पुनः टूट कर जुड़ती चली जाती है। आने वाले क्लू के साथ विगत के हिस्से को जोड़ने की ऐक्सपर्टाइज के बिना सैकड़ों लोगों की ऊधमसिंह नगर से लेकर टिहरी, पौड़ी और गुमानी-गौर्दा-गिर्दा तक पहुँचना आसान नहीं था। मौलिकता यह रही कि लेखक ने यथार्थ को छोड़ा नहीं, बुना और बुनाहट में उसकी मासूमियत छूटी नहीं। रोचकता इतनी बनी रही कि पाठक उससे ऐसे चिपक जाता है जैसे अपनी पसन्द के टी.वी. के सीरियल से बच्चे चिपक जाते हैं। स्थानीयता जो अब हमारी खास जरूरत हो गई है, इस उपन्यास ने उसको निखारने की भरपूर कोशिश की है। पचास-साठ वर्ष पहले अपने निजी सृजन-कौशल से जैसे शेखर जोशी ने 'कोशी के घटबार' में और लोक गाथा के कथियाने के शिल्प को लेकर लिखे गस 'मुख सरोवर के हंस' में शैलेश मटियानी ने उसे निखारा था। हिन्दी की आंचलिक शैली विधा में इन्हें लोक प्रियता किस्म के व्यक्तियों की होनहारिता को पहली बार भाषा दे रही है। वे ऐसे लोग हैं जिनके पास अवसर नहीं हैं। भावनाऐं और कहने की कुलबुलाहट जबर्दस्त है परन्तु लिपि नहीं है। लोक कथाओं की जैसी धरोहरें हैं वे। सरिजोयम बहाव में, बहसों से निकाली गई वे कथाऐं साहित्य के खजाने की खोज-रिपोर्ट ही हैं। संस्कृत, संस्कार और पुराने साधन विहीन जमाने की मिल-जुल कर उत्सव मनाने ककी झांकी को भी किस तरह इतिवृत्त में गूंथा जा सकता है, इस कृति में देखा जा सकता है।

कुमाउंनी में कहानियाँ और उनन्यास लिखने के प्रयास में लगे लेखकों को नजरें इनायत करती हैं 'ये आपबीतियां, कानोंकान सुने जाते नियत श्रव्य वाकये, अनहोनी घटनाऐं, किस्सों की तरह सुनाने वालों के मुँह के पास कान सटाकर कहीं बतकहियाँ ऐसी कि सुनाने वाले को कहना पड़े कि तू किसी को मत सुनाना अद्भुत है। भाग्य और सौभाग्य जैसे अमूर्तनों की परम्पराओं से पहचान करा देने वाली, संस्कार और संस्कृति को लौकिक रश्मों से स्कूलिंग से पहले ही बच्चों को मुगली घुट्टी की तरह दे देने वाली सनातनता कहानी में कैसे लाई जा सकती है ऐसा ट्रेन्ड लेकर आया है यह उपन्यास।

एक किस्म से इस ट्रेन्ड को कुमाउंनी में लाकर हमारी भाषा के लेखक शेखर जोशी, मटियानी, हिमांशु जोशी जैसे बीसियों लेखकों की आंचलिकता को उत्तराखण्ड में वापस ला सकते हैं। ऐसी वापसी के लिए मौलिक सृजन की बारीकी और काल्पनिक उहापोह खड़ा करने की अकड़पच्चू नहीं, लोक के मौखिक कत्थ्य से लिख कर अतीत यथार्थ के तन्तुओं को पिरोने की दक्षता आनी चाहिए। मुख-सुख से शब्दों को छोटा, सरल और देशज बनाने की प्रवृत्ति हमारे लोक-जीवन में मौजूद है। हमारे अनपढ़ लोक-गायकों को अपनी बात सम्प्रेषित करने में कठिनाई नहीं होती। पढ़ों लिखों को ही क्यों होती है?

-0-

ज्योतिष की बातें - 116

9 मार्च 2023 को अभी अस्त चल रहा शनि कुम्भ राशि में उदय हो जाएगा। अतः शनि से मिलने वाले शुभाशुभ फल अब स्पष्ट रूप से प्राप्त होने लगेंगे।

12 मार्च 2023 को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करेगा। वहाँ पर राहु तो पहले से ही विद्यमान है और साथ ही शनि की दृष्टि भी पड़ेगी इसलिए इस समय शुक्र निर्बल बल्कि अशुभ फलदायक रहेगा। अतः शुक्र भौतिक सुख आदि अपने कारक विषयों में शुभ फल प्रदान करने में अभी असमर्थ रहेगा।

13 मार्च 2023 को मंगल अपनी शत्रुराशि मिथुन में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभ दृष्टि भी नहीं होगी अतः इस समय मंगल निर्बल रहेगा। फिर भी मंगल पराक्रम आदि अपने कारक विषयों में मेष, मकर व सिंह राशि के जातकों को अल्प मात्र में शुभ फल प्रदान करेगा।

होलिका दहन- फाल्गुन पूर्णिमा भद्रा रहित तिथि में प्रदोषकाल में होलिका दहन किया जाता है। अतः पूर्वी भारत में जहाँ पर 7 मार्च को सूर्यास्त 6.10 मिनट से पूर्व हो जाएगा वहाँ पर मंगलवार 7 मार्च को होलिका दहन होगा । शेष पश्चिमी भारत में जहाँ पर सूर्यास्त 6.10 के बाद होगा वहाँ पर सोमवार 6 मार्च को ही होलिका दहन हो जाएगा ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 7

जाति व्यवस्था स्वाभाविक अथवा कृत्रिम

आजकल अधिकांश लोगों का कहना है कि जाति प्रथा समाप्त कर दी जाए। यह तो तभी हो सकता है जब ब्राह्मण पढ़ना-पढ़ाना बन्द कर दें, क्षत्रिय युद्ध करना बन्द कर दें, वैश्य व्यापार करना बन्द कर दें, सुनार सोने का कार्य बन्द कर दें, लोहार लोहे का काम करना बन्द कर दें। क्या यह सम्भव होगा !

मनुष्य जाति को गुण और कर्म दोनों के आधार पर मुख्य रूप से चार वर्णों में बांटा गया है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। इन सभी में असंख्य उपजातियाँ हैं। ब्राह्मणों में भी ऊँचे और नीचे ब्राह्मण होते हैं, जिनमें आपस में वैवाहिक सम्बन्ध नहीं होते हैं। शूद्रों में भी सैकड़ों जातियां हैं जो स्वयं को ऊँचा और दूसरे को नीचा मानते हैं, उनमें भी आपस में रोटी-बेटी सम्बन्ध नहीं होते हैं। इतिहास पुराण में विभिन्न प्रकार की जातियों का वर्णन पाया जाता है जैसी विद्वान, वैश्य, सैनिक, मणिकार, कुम्भकार, सूत्रकार (बुनकर), शस्त्रकार, मायूरक (छाता पंखा बनाने वाले), क्राकचिक (लकड़ी चीरने वाले), वेधाक, रोचक (रंगने वाले), दन्तकार, सुधाकर (चूना बनाने वाले), गन्धी, स्वर्णकार, कम्बलकार, स्नापकोष्णोदक, वैद्य, धूपक, शौण्डिक (मद्यविक्रेता), रजक (धोबी), तुन्नवाय (दर्जी), शैलूष (नट), कैवर्तक (केवट) आदि आदि।

आजकल अब नई जातियाँ उत्पन्न हुई हैं जैसे- डॉक्टर, इंजीनियर, सुपरवाइजर, इंस्पेक्टर, वकील, प्राफेसर, लेक्चरर, अकाउंटेण्ट, बिजनेसमैन, इंडस्ट्रिलिस्ट, क्लर्क, मैनेजर, प्रोग्रामर, साफ्टवेयर, फोर्थक्लास, फौजी, पुलिस, गार्ड, चौकीदार, आदि आदि। इनमें भी बहुत भेदभाव है, ऊँच नीच है। फोर्थ क्लास के क्वार्टर तो दूसरों से अलग ही बनाए जाते हैं। एक प्रोफेसर अपनी बेटी का सम्बन्ध बेसिक स्कूल के टीचर से नहीं कर सकता ।

विभिन्न प्रकार की जातियाँ जैसी पहले थीं, वे आगे भी रहेंगीं क्योंकि ये गुण व कर्म के अनुसार स्वाभाविक है, सिर्फ नाम बदलते रहेंगे । उनमें ऊँच-नीच भी स्वाभाविक है, लेकिन विभिन्न वर्गों में घृणा नहीं होनी चाहिए, समरसता होनी चाहिए क्योंकि सभी जातियों का समाज के निर्माण में, देश के निर्माण में सहयोग होता है ।

-सरल

दन, चुटका, आसन, पंखी एवं शॉल निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला

हस्तशिल्प वस्तुएं इस क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पहचान रही हैं : मंजुला टोलिया

(मनोज सिंह बोथ्याल)

मुनस्यारी में मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत दन, चुटका, आसन, पंखी एवं शॉल निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला, स्व.डॉ.आर.एस.टोलिया रा. महाविद्यालय मुनस्यारी में जारी है। यह कार्यशाला 31 मार्च 2023 तक चलेगी। प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए समाज सेवी श्रीमती मंजुला टोलिया ने कहा कि दन, चुटका, पंखी, शॉल तथा अन्य हस्तशिल्प वस्तुएं इस क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पहचान रही हैं। यहाँ की अधिकांश महिलाएं लम्बे समय से अपनी हस्तशिल्प एवं हथकरघा कारीगरी से इन वस्तुओं का निर्माण एवं विपणन कर रहे हैं। उन्होंने महाविद्यालय के छात्र छात्रओं से इस प्रशिक्षण कार्यशाला का लाभ उठाने तथा पूरी लगन एवं मेहनत से दन, चुटका, आसन, पंखी एवं शॉल निर्माण की बारीकियों को सीखने का आह्वान किया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. हितेश कुमार जोशी ने कहा कि औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ हैंडलूम से हुआ है तथा हस्तशिल्प एवं हथकरघा ने मानव सभ्यता के विकास तथा परिवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान दौर में भी हथकरघा एवं हस्तशिल्प नवीन डिजाइन एवं तकनीकी के साथ मानव जीवन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। अतः विद्यार्थियों को इस प्रशिक्षण से आजीविका सृजन के नवीन अवसर प्राप्त होंगे। मुख्यमंत्री नवाचार योजना के नोडल अधिकारी डॉ. रवि जोशी ने बताया कि विद्यार्थियों में नवाचार विकास एवं कौशल विकास उन्नयन हेतु यह योजना प्रारम्भ की गई है। महाविद्यालय के 45 छात्र-छात्रएं पहले चरण में दन, चुटका, आसन, पंखी एवं शॉल निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। यह प्रशिक्षण आगामी 31 मार्च तक चलेगा। कहा कि वर्तमान दौर में भी हथकरघा, हस्तशिल्प के अन्तर्गत दन, चुटका, पंखी, शॉल इत्यादि की बाजार में अत्यधिक मांग है। विद्यार्थियों को इस प्रशिक्षण से आजीविका के नवीन एवं वैकल्पिक अवसर प्राप्त होंगे। इस अवसर पर जोहार क्लब अध्यक्ष केदार मर्तोलिया का कहना था कि इस क्षेत्र में ऊनी कपड़ों, दन, चुटका, आसन, पंखी एवं शॉल इत्यादि का उत्पादन ग्रामीण क्षेत्रों में किया जा रहा है। सोशल मीडिया के वर्तमान दौर में अब नवीन पीढ़ी इस ऐतिहासिक कला को नहीं सीख रही पा रही है। अतः महाविद्यालय में यह प्रशिक्षण कार्यशाला नवीन पीढ़ी के हथकरघा एवं हस्तशिल्प प्रशिक्षण के लिए मील का पत्थर साबित होगी। प्रशिक्षण कार्यशाला में श्रीमती हीरा देवी धर्मशक्तू, कमला पांगती, कंचना देवी, दुर्गा प्रसाद, एडवोकेट देव सिंह बोरा, लक्ष्मण सिंह, तनुजा पांगती, दीपिका देवी, जानकी देवी, हंसा देवी पांगती, कलावती देवी पांगती, गीता गीता पांगती, बसन्ती रावत, बीना वर्मा, गोकर्ण लस्पाल, ममता देवी, तुलसी देवी, मीना देवी, हरीश सिंह आदि थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पड़ाव की जमीनों को संरक्षण मिलना चाहिये

बागेश्वर, रामनगर सहित जिन स्थानों पर भी भोटिया पड़ाव रहे हैं उन्हें बचाने की मुहीम

देहरादून/बागेश्वर। सीमान्त क्षेत्र के व्यापारियों के पुराने पड़ाव किन हालातों में पहुँच चुके हैं, सर्वविदित है। पड़ावों की भूमि पर घेराबाड़ी हो चुकी है और इनकी निशानी भी मिटा दी गई है। इन्हें बचाने की गुहार लगाते हुए गंगासिंह पांगती के नेतृत्व में एक दल विगत दिवस मुख्यमंत्री से मिला। इनकी मांग है कि व्यापारियों के जो भी पड़ाव थे, उन्हें संरक्षित किया जाए। यदि उन पर अतिक्रमण है तो उसे हटा कर हकदार को मिले। पड़ाव की जमीनों को बचाने की मुहीम में देहरादून गया दल लौटकर बागेश्वर आते ही सबसे पहले बागनाथ मन्दिर में पूजा करने गया।

राज्य आन्दोलनकारी गंगा सिंह पांगती ने कहा कि बागेश्वर में ऐतिहासिक उत्तरायणी मेला लगता है परन्तु यहाँ पर भी पड़ाव सिमट कर रह गया है। ऐसे में सीमान्त क्षेत्र परम्परागत व्यापारियों को सुविधा नहीं मिल पा रही है। मेले के दौरान आने वाले व्यापारी परेशानी से जूझते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी भूमि रामनगर में थी जिसका वर्तमान में नाम निशान मिटा दिया गया है। अन्य स्थानों पर जो यात्रा पड़ाव थे उनकी खोज कर सरकार को संरक्षित करना चाहिये।

उल्लेखनीय है कि शिखर सेवा संगठन धरमघर बार-बार पड़ाव के संरक्षण की मांग करता रहा है। ग्राम प्रधान संगठन द्वारा भी इस बारे में कहा गया था। समाजसेवी गंगा सिंह पांगती ने कई बार इसके लिये आन्दोलन किये। पिघलता हिमालय ने बागेश्वर के पड़ाव को संरक्षित किये जाने के मामले को विस्तार से उठाया था। इसी प्रकार रामनगर में पड़ाव के बातों को पिघलता हिमालय समय समय पर लिखता रहा है। इस मुहीम को परिणाम तक पहुँचाने में तभी सफलता मिलेगी जब इससे जुड़े लोग जुटेंगे।

उक्रांद गरम, प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजते हुए मांग

सरकार यदि भ्रष्टाचारियों को संरक्षण नहीं दे रही है तो सीबीआई जाँच से गुरेज क्यों?

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड क्रान्ति दल प्रदेश की धामी सरकार पर गरम हो चुका है और घपलों की सीबीआई जाँच की मांग की जा रही है।

उक्रांद द्वारा प्रधानमंत्री के नाम एक ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट के माध्यम से दिया गया है। दल के सर्वोच्च नीति निर्धारण समिति के सदस्य भुवन चन्द्र जोशी ने कहा कि मुख्यमंत्री धामी यह कहते फिर रहे हैं कि सीबीआई जाँच की वहीं लोग मांग कर रहे हैं जो भर्ती परीक्षाएं नहीं होना देना चाहते हैं। मैं धामी जी से कहना चाह रहा हूँ कि अगर आप भ्रष्टाचारियों को संरक्षण नहीं दे रहे हैं तो आपको सीबीआई जाँच कराने से गुरेज क्यों है जबकि सीबीआई जाँच में असली अपराधी पकड़ में आएंगे और युवाओं का विश्वास इन भर्ती परीक्षाओं में दोबारा से जागेगा। उन्होंने यह भी कहा कि उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग और उत्तराखण्ड अधीनस्थ चयन आयोग का पुनर्गठन किया जाना चाहिये क्योंकि इसमें पूर्व में रहे सभी लोग कहीं न कहीं भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। इस अवसर पर केन्द्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष खड़क सिंह बगड्वाल ने कहा कि हमारी बहन बेटियां आज उत्तराखण्ड में सुरक्षित नहीं हैं, अंकिता हत्याकाण्ड के दोषियों का नारकोटिक्स जाँच आज तक नहीं हो पा रही है और मुख्यमंत्री के द्वारा फास्ट ट्रैक कोर्ट में इनका मुकदमा चलाने की बात भी हवा में उड़ गई है।

दल ने प्रधानमंत्री से प्रदेश की व्यवस्था में हस्तक्षेप कर सुधार की मांग की है। ज्ञापन देने वालों में प्रकाश जोशी, मदन सिंह मेर, राजेन्द्र नेगी, केडी गुणवन्त, बृजमोहन सिजवाली, सुशील उनियाल, एनडी तिवारी, हीरा सिंह बिष्ट, कमल पन्त, उत्तम बिष्ट, सुरेश जोशी, देवेश आर्य, बालम मनराल, सूरज पाण्डे थे।

हल्द्वानी मटर गली पर अतिक्रमण हटा लेकिन बहुत कुछ अभी और हटाया जाना है शहर से

परिक्रमा

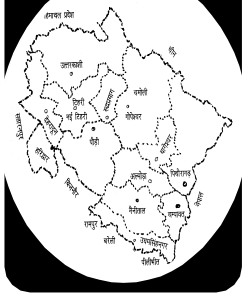

हल्द्वानी। अतिक्रमण की चपेट में भाबर के बाग-बगीचे, सिंचाई की भूमि, जंगलात की भूमि, लोनिवि की भूमि है। इसके अलावा दबंगों की खुलेआम मांग को रोका नहीं जा सका है। अभी ताजा मटर गली इलाके पर अतिक्रमण हटा है और उम्मीद है कि ऐसे ही कई अतिक्रमण हट जाएंगे। लेकिन यह सब शिकायतों के बाद ही हटेगा यह सोचकर आम जनता चुप हो जाती है। सब जान रहे हैं कि दबंगों के खिलाफ कौन बोलेगा? ऐसे में शासन प्रशसन के ऊपर है कि वह क्या निर्णय लेगा। सबको पता है हल्द्वानी की नहर कबरिंग सड़क में सारी जमीन घेर कर निर्माण हो चुका है, गलियों पर कब्जे हो चुके हैं।

फिलहाल घिचपिच हो रही मटर गली पर अतिक्रमण हटना अच्छी बात है। यहाँ व्यायामशाला पर बनाई गई अवैध आठ दुकानें करीब चार साल बाद ध्वस्त की गईं। 60 साल पुरानी इस व्यायामशाला की जनहित व्यायामशाला समिति के पूर्व सचिव मंगतराम गुप्ता की रिट पर यह ध्वस्तीकरण की कार्रवाई हुई। इसका मतलब यदि रिट नहीं होती तो कब्जा नहीं हटता!

यहाँ नगर निगम की ओर से पहले दो बार नोटिस दिया गया और स्वयं न हटने पर तोड़फोड़ हुई। बताया जा रहा है कि व्यायामशाला का सामान भी गायब कर दिया गया है। मंगतराम का कहना है कि तथाकथित कमेटी के कुछ लोगों ने छेड़छाड़ की है। इस बीच सवाल उठे के व्यायामशाला के निकट एक सरकारी गूल भी है और इस पर कब्जा है, अतिक्रमण हटा तो इसका अतिक्रमण क्यों नहीं हटा? जनहित याचिका पर कोर्ट ने आदेश दिया है कि डीएम दोबारा से निरीक्षण कर अतिक्रमण हटाकर उसकी रिपोर्ट एक माह में प्रस्तुत करें।

रानीखेत छावनी क्षेत्र में आचार संहिता लागू, तैयारी

सिविल क्षेत्र को चिलियानौला नगर पालिका परिषद में मिलने की उम्मीदों को झटका लगा

रानीखेत। छावनी बोर्ड की निर्वाचन प्रक्रिया को देखते हुए आचार संहिता लागू हो चुकी है। इससे उस उम्मीद को झटका लगा है जो पिछले दो-चार महीने से बनी हुई थी। माना जा रहा था कि सिविल क्षेत्र को चिलियानौला नगर पालिका परिषद में मिलाया जायेगा।

रानीखेत कैण्ट बोर्ड के अधिशासी अधिकारी नागेश पाण्डे ने बताया है कि अधिसूचना के समय दिए गए दिशा निर्देशों के तहत ही चुनाव कराए जाएंगे। उच्च स्तर से निर्देशों के तहत समयावधि के भीतर निर्वाचन प्रक्रिया पूर्ण की जानी है। आगामी 30 अप्रैल को कैण्ट बोर्ड के चुनाव होने की सूचना से छावनी क्षेत्र में चुनाव की सरगर्मी है। सभी सात वार्डों के सम्भावित प्रत्याशी अपनी तैयारनी में जुटे हैं। रानीखेत कैण्ट बोर्ड का कार्यकाल 2020 में समाप्त हो गया था। बीते वर्ष वैरीड बोर्ड अस्तित्व में आया। जिसके चलते सम्बन्धित छावनी के ब्रिगेडियर उस बोर्ड के पदेन अध्यक्ष होते हैं। औपचारिक रूप से एक सदस्य नामित भी शामिल होता है।

कैण्ट बोर्ड के चुनाव फिर 6 माह के लिये स्थगित होने पर माना जा रहा था कि सिविल क्षेत्र को चिलियानौला नगर पालिका परिषद में शामिल किया जा सकता है परन्तु रक्षा मंत्रालय की चुनाव की अधिसूचना जारी करने से पालिका में शामिल होने की आस लगाए सिविल क्षेत्र के नागरिकों को मायूस होना पड़ा है। पिछले कई वर्षों से कैण्ट बोर्ड को सिविल क्षेत्र के लोग रानीखेत जिला या नगर पालिका बनाए जाने की मांग उठाते रहे हैं। इसके लिये कई बार आन्दोलन भी हो चुका है। चिलियानौला नगर पालिका बनने के बाद कैण्ट सिविल क्षेत्र के लोगों को पालिका में शामिल होने की उम्मीद थी, जिसे अब झटका लगा है।

टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन के लिये केन्द्र गम्भीर

पूर्व सीएम त्रिवेन्द्र रावत का दौरा और कार्यकर्ताओं से मुलाकात के मायने भी

बागेश्वर। पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत के दौरे और कार्यकर्ताओं से मिलने के मायने निकाले जा रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री और महाराष्ट्र में राज्यपाल पद से इस्तीफा देकर सक्रिय हुए भगत सिंह कोश्यारी की सक्रियता के बीच त्रिवेन्द्र का दौरा और भी खास है। आने वाले लोकसभा चुनाव व अन्य राजनीतिक गणित के लिहाज से भी राजनीति के पण्डित विचार कर रहे हैं कि आखिर क्या होने वाला है।

फिलहाल पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने पार्टी कार्यालय में पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार राज्य के विकास के लिये गम्भीर प्रयास कर रही हे। टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन के लिये केन्द्र ने मंजूरी दे दी है। उन्होंने युवाओं पर देहरादून में हुए लाठीचार्ज के लिये माफी मांगी।

श्री रावत ने कहा कि प्रदेश को पहली बार विकास के लिये काफी धन राशि मिली है। साढ़े 16 हजार करोड़ रुपया चारधाम यात्रा के लिये मिला है। इसके अलावा अन्य विकास कार्यों के लिये अलग से बजट मिला है।

पत्रकारों के सवाल का जबाब देते हुए उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास आगामी लोकसभा चुनाव के लिए कोई मुद्दा नहीं है, जिससे वह आधारहीन बयानबाजी कर रही है। नकल विरोधी कानून की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि पूर्व में नकल कराने के मामले में जो जो अधिकारी या अन्य कोई दोषी मिल रहा है तो उसके खिलाफ सरकार कार्रवाई कर रही है। भगत सिंह कोशयारी की राज्य में वापसी पर उन्होंने कहा कि भगत दा ने स्वेच्छा से राज्यपाल का पद छोड़ा है। उन्होंने हमेशा युवाओं को अवसर दिया है। आगे भी उनका मार्गदर्शन भाजपा को मिलता रहेगा।

अपने भ्रमण में त्रिवेन्द्र भाजपा के चमोली जिला प्रभारी एड. कुन्दन सिंह परिहार के खोली स्थित घर भी गये और उनके पिता के निधन पर दुःख व्यक्त किया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रंगों का त्यौहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं-

J L A Foods

(Manufacturers of Quality Rice)
Vill- Banoosi,
Post- Jhankat
Khatima
(U S Nagae)

RAMA AGRO INDUSTRIFS

(Manufacturers of Quality Rice)
Vill- Banoosi,
Post- Jhankat
Khatima
(U S Nagae)

SIDDHIVINAYAK SOLVENT LLP

Sidcul Industial Park Sitargang, US Nagar

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

सप्ताह के पर्व

चैत कृष्ण पक्ष
8 मार्च- होली (धुरड्डी)
9 फरवरी- भैया दूज
11 फरवरी- संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी
15 फरवरी- शीतलाष्टमी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्स: (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मत मारो मोहन पिचकारी।।
फूटे गागर भीजे चूनर,
अंगिया भीगे फुलकारी।।
हौले चलूं घर सास बुरी है,
धमकी चलूं छलके गगरी।।
जो मैं कहूं सो ग्वालवा,
आप ही कृष्ण गिरधारी।।
सास खयारी ननद धतेरू
बूढ़ लो ससुर दे गारी।।...

मेरो री मनमोहन ललना,
मधुवन से कब आवैगो।।
मेरो भंवरा वन को चलो है,
क्या क्या सौदा लावेगो।।
हल्दै की गांठी सिन्दूर की डबिया,
काजल सुरमा लावैगो।
यकपट दोपट तेपट साड़ी,
चौपट अंगिया सिलावेगो।।..

नन्द जी को दुलारो
बड़ो रसिया मत छेड़ो मुझे।
बलहारी सैंया मत छेड़ो मुझे।।
कैसो रंग बनो रसिया को,
तुम कहां पर डारो।
गाड़ो रंग बनो रसिया को,
तुम देवरन के घर जाओ।
रातों रंग बनो रसिया को,
तुम भौजिन पर डारो...

गोकुल कुंज में धूम मची,
कान्हा देखन जाय रंग में बोरत है।।
वृन्दावन की कुंज गलिन में,
राधा संग सोहाय रंग में बोरत है।।
राहा बाट में रोकत टोकत,
भर मारे पिचकारी रंग में
बोरत है।।.....

अमृत काल छलकत जाए.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस प्रदेश के लिये खड़े हैं। सीएम पुष्कर धामी पर तो पूरा दारोमदार है। एकदम ऑलराउण्डर हैं। धांकड़ नेता सतपाल महाराज, डॉ. धन सिंह रावत, हरीश धामी, बंशीधर भगत, बिशन सिंह चुफाल, रेखा आर्या का त्याग भी सब देख रहे हैं।

अमृत काल में होने वाले वाले होली के मायने बहुत रसीले और सुरेली हैं तभी तो युवा विधायक सुमित हृदयेश, उपनेता प्रतिपक्ष भुवन कापड़ी, भीमताल के विधायक रामसिंह कैड़ा, नैनीताल की विधायक सरिता आर्या भी तान लगा रहे हैं। यशपाल आर्या तो बहुत अनुभवी हुए, बाजपुर से लेकर नैनीताल तक सम्भाल रखा है। मेयर जोगेन्द्र पाल सिंह रौतेला, पूर्व ब्लाक प्रमुख भोला भट्ट, दीपक बल्युटिया, चैरयमैन हेम पन्त ने रंग की धार बराबर छड़की है। विधायक फकीरराम, पूर्व विधायक मीना गंगोला, नारायण राम भला कहाँ मानने वाले हैं, वह भी लगातार झूम रहे हैं। ये छलकने, झलकने, फरकने का साल भी है। कांग्रेस के जादुई नेता प्रकाश जोशी ने लाइन से लाइन मिला रखी है। काशीपुर में चीमा साहब की चली है। रुद्रपुर में विधायक शिव अरोरा की चलबल से पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल पक्के रंग से खेलने की बात कर रहे हैं। किच्छा में पूर्व विधायक राजेश शुक्ला जोड़-जन्तर को आतुर हैं।

चिन्ता की कोई बात अब नहीं है क्योंकि मुख्यमंत्री शिविर कार्यालय चम्पावत और टनकपुर में वीडियो कान्फ्रेंसिंग सेट लग चुके हैं। सीएम ई-सम्वाद कर सकेंगे जिससे लोगों की देहरादून दौड़ कम हो जायेगी। बेरोजगार संघ के अध्यक्ष बॉबी पंवार का मामला पक्के रंग वाला लग रहा है। भर्ती घोटाले की सीबीआई जाँच की मांग को लेकर आन्दोलन कर रहे युवाओं पर लाठीचार्ज में बॉबी गिरफ्तार हुआ। छूटने के बाद कोर्ट ने उन्हें धरना स्थल जाने की इजाजत दे दी। सबने होली खेलनी है, गानी है और नाचना है। इसलिये जुग-जुग जीवें मित्र हमारे, बरस-बरस खेलें होली। पिघलता हिमालय के सभी पाठकों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)